RD 21-72

MULTANI MAHAVIDYALAYA
SELU

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-25 VOLUME-2 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

2

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

प्रचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ. सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

शोध ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-25 VOLUME-2 IMPACT FACTOR - SJIF-6.586, IIFS-4.125,

ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शुक्रवार 30 जुलाई, 2021

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

अनुक्रमणिका

01.'भारतीय संस्कृति एवं मध्यमवर्गीय समाज में वृद्धावस्था का पीड़ा बोध और बीच की रेत : डा0 विश्वनाथ प्रसाद'–*रूबी सिंह*.....5

02.लोकजीवनाचे तत्वज्ञान व आशयसंपन्न म्हणी–*प्रा. डॉ. वसुमती पी. पाटील*.....8

03.अस्मिता,अस्तित्व औरअधिकार केलिए संघर्षरत भारत का मजदूर वर्ग और केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ–*पवन कुमार रावत*.11

04.संत रविदास जी के काव्य में मानवतावाद–*काना राम*.....14

05.रामचन्द्रिका में भारतीय संस्कृति के विविध आयाम–*डॉ.प्रेम प्रकाश शर्मा*.....17

06.लोक गीतों में उराँव लोक गीत का प्रयोजन–*बीना कूमारी उराँव*.....19

07.पत्रकारिता के विवधि रूप एवं हिन्दी भाषा का स्वरूप–*डॉ. मुकेश भार्गव*.....21

08.गुरदयाल सिंह एवं फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में रिश्वत एक अध्यय–*सुनीता देवी ' डॉ.हरदीप सिंह '*.....23

09.समर शेष है : एक निम्न–वर्ग की यतीम की गाथा–*रूपधर गोमांगो*.....26

10.ऑनलाईन शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन–*डॉ.अश्वनी ', डॉ.अजीत कुमार, बोहत '*.....29

11.ह्रासोन्मुखी लोकतान्त्रिक मूल्य एवं राग दरबारी–*डॉ.संजय कुमार सिंह*.....33

12.'किन्नर' जीवन का यथार्थ–*डॉ0नरेश कुमार*.....35

13.आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तथा परनिर्भर मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन–*डॉ.यतीन्द्र सिंह*,.....38

14.मीडिया की भाषा और माध्यम–*डॉ.विजयसिंह ठाकुर*.....42

15.अण्णाभाऊ साठे: मराठीतील बहुपेडी लेखक–*प्रा.सखाराम मालके*.....43

16.'छिन्नमस्ता' उपन्यास में नारी सशक्तिकरण–*डॉ0राजीव कुमार*.....46

17.कबीर की धर्मसाधना : डा0 रामचन्द्र तिवारी–*ऋतुराज यादव ', डा0 राजेश कुमार तिवारी '*.....48

18.भारतीय किसान संघर्ष जारी है–*डा.देविदास गोपलराव बोर्डे*.....50

19.मालती जोशी के कथा साहित्य में दहेज उत्पीड़न की समस्या–*नीरज, शोधार्थी*.....52

20.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में राजनीतिक समस्याऐं–*डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की*.....55

21.Cultural Optimism of Indian Society-*Dr. Santosh Shukla*.....57

22.'आवाँ' उपन्यास में स्त्री विमर्श–*डॉ.पी.के.प्रतिभा*.....58

23.सूर्यबाला के कथा साहित्य में सांस्कृतिक परिदृश्य–*सीमा देवी*.....60

24.उपन्यास विधा–*डॉ.शिंदे अनुराधा, देगलूर*.....63

25.कलात्मक अभिव्यक्ति हेतु विभिन्न कलाओं की अन्तः प्रेरणा : जगन्नाथ मुरलीधर अहिवासी के विशेष संदर्भ में–*डॉ.वर्षा सिंह*.....64

26.माध्यमिक शासकीय विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–*डॉ. दीप्ति सक्सेना*.....66

27.'रुको रुको रामराज आ रहा है' में बहिष्कृतों के जीवन का यथार्थ–*डॉ.मिलिंद बनकर*.....70

28.साहित्य एवं पर्यावरण–*डा0 सविता*.....72

PRINCIPAL
Yuvan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में राजनीतिक समस्याएँ

–डॉ अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
हिंदी विभागाध्यक्ष नूतन महाविद्यालय, सेलू

स्वतंत्रता के बाद थोडा बहुत परिवर्तन ग्रामीण जीवन [illegible] है। गाँव ने पंचायत राज के कारण आर्थिक सुबत्ता आई [illegible] शिक्षा और कर्ज का बोझ, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, [illegible] रुढी परंपरा, स्त्री शोषण के बावजूद आज गाँव में [illegible] का प्रभाव दिखाई देता है। मैत्रेयी पुष्पा के अधिकृत [illegible] में ग्रामीण जीवन चित्रित हुआ है। यहाँ का ग्रामीण [illegible] अन्य भारतीय गाँव से अलग है। इसी ग्रामीण जीवन की [illegible] समस्याएँ अपने उपन्यासों में चित्रित कर समाज [illegible] की कोशिश मैत्रेयी ने उपन्यासों के माध्यम से की है।

स्वतंत्रता के पश्चात नेताओं ने 'रामराज्य' का सपना [illegible] किंतु वर्तमान समय की यदि हम बात करे तो राजनीति [illegible]करण तीव्र गति से बढ़ रहा है। देश में जो तीव्र गति में [illegible] अपराधीकरण हो रहा है उसे दूर करने की नैतिक [illegible] प्रत्येक भारतीय नागरिकों की है। हमें ऐसा लग रहा है [illegible] हम नैतिक मूल्य हो चुके है उन मूल्यों को फिर से हमें [illegible] करना होगा।

भारतीय राजनीति में अपराधीकरण का प्रवेश एक दिन [illegible] नहीं हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात सभी दल अपने–अपनी कुर्सी [illegible] के लिए तब से लेकर आज तक जी जान से मेहनत कर [illegible] है। उसी का परिणाम है कि भारतीय राजनीति में अपराधीकरण [illegible] प्रवेश हुआ है। अब तो राजनीति में गुणवत्ता हमारी चुनाव [illegible] का आधार नहीं रही है। यही कारण है कि योग्य व्यक्ति [illegible] नहीं आ पाने पर और यदि आती भी है तो, धन शक्ति का [illegible] उन्हें खींच लेता है। ऐसी परिस्थिति में स्वयं राजनीति से [illegible] अलग होते हैं। परिणामतः राजनीति में स्वार्थपरता बढ [illegible] है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि, देश की आजादी के सात [illegible] के बाद भी राजनीति का आधार जातीयवाद, क्षेत्रवाद तथा [illegible]–भतिजावाद रहा है। हम देखते हैं चुनाव चाहे ग्राम पंचायत [illegible] हो या विधानसभा, लोकसभा के हो उस चुनाव प्रक्रिया में [illegible] फैल चुका है। डॉ. माधवी जाधव के मतानुसार 'राजनीति [illegible], जनपालन तथा जनता को समुचित रुप में शासित [illegible] अनेक उद्देश्य, अनुसंचित विध्वंसककारी भ्रष्टाचार पर अंकुश [illegible] सत्य एवं शिव की ओर अनुसरण करती है।"[1] देश का [illegible] राजकारण संवैधानिक नीति नियमों के अनुरुप चलने का परम कर्तव्य राजनीति का है।

राजनीति की ऐसी ही दशाओं का चित्रण मैत्रेयीजी ने अपने उपन्यासों में दर्शाकर चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के पश्चात महात्मा गांधी नेहरू जी ने राजनीति का सपना देखा उसी सपने को मैत्रेयी ने अपनी लेखनी द्वारा पूरा किया क्योंकि उनके साहित्य में राजनीति जो दलितों, वंचितों की जागिरी नहीं बल्कि उनके साहित्य में जो दलितों, वंचितों के साथ–साथ स्त्री को भी राजनीति में स्थान देखकर अपनी सघन लेखनी का परिचय करवाया किंतु उनके साहित्य में जिन राजनीति समस्याओं को चित्रित किया है वह सिर्फ छोटे–छोटे गाँव की राजनीतिक समस्याएँ हैं। क्योंकि मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का संपूर्ण परिवेश ग्रामीण आँचलिक होने के कारण उस क्षेत्र के लोगों की मानसिकता, नैतिकता स्त्रियों की अशिक्षिता, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आर्थिक पराधीनता, असुरक्षा का भय, उत्पीड़न इन सब का अध्ययन कर राजनीतिक समस्याओं को चित्रित किया है।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में मीरा के पिता बरजोर सिंह के राजनीतिक स्थान को लेकर मैत्रेयीजी ने प्रसंग प्रस्तुत किया है। बरजोर सिंह जिन्होंने राजनीति में हिस्सा लिया। वह विधानसभा के चुनाव से लेकर ग्राम–प्रधान चुनाव तक का दौर, राजनीति में नैतिक मूल्यों की कमजोरी उपन्यास में प्रस्तुत है। बरजोर सिंह ने विधानसभा चुनाव में बढ़–चढ़कर हि[illegible] ताकि पूनम हितेषी एम. एल. ए. की चंदनपुर गाँव के सहयोग मिल सके। हितेषी के पद प्राप्ति बरजोर सिंह तरह से जीत है। क्योंकि, हितेषी का फायदा लेकर गाँव का बनने की लालसा बरजोरसिंह में रही। गाँव में भले ही विरोधी थे। किंतु विजयश्री पर जोर सिंह को मिली। प्रस्तुत उपन्यास सिर्फ इसी घटना प्रसंग को लेकर राजनीतिक समस्याओं का चित्रण करते हुए मैत्रेयीजी ने राजनीति में शराब, जुआ, सुंदरी जैसे हथ–कंडो को अपनाकर और बड़े राजनितियों का समर्थन पाकर गाँव के प्रधान बनने का सफर बरजोर सिंह के माध्यम से प्रस्तुत किया।

'इदन्नमम' उपन्यास में सोनपुरा गाँव का चित्रण कर गंदी राजनीति को प्रस्तुत किया है। मंदा के पिता ने गाँव में अस्पताल बनवाने का सपना देखा। गाँव में अस्पताल बनवाने में मंदा के पिता महेंद्र सिंह का बहुत बड़ा योगदान रहा है। किंतु अस्पताल के उद्घाटन के समय उनकी हत्या हो जाती है। वहाँ की गंदी राजनीति के कारण उनकी हत्या होती है। यहाँ के लोग

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist.

निर्विरोध चुनाव के पक्ष में रहते है। वहाँ के दादा-मोदी आर चीफ इन तीन व्यक्तीयों का मन है की वोंटो के कारण पार्टी बंदी होती है। बस्ती का विभाजन होता है। वे कहते है -'हमारे लिए तो पंचायत सौंची। जो बात कहनी है, खुल कर कहो। निधड़क जाहिर करो अपनी मंसा। दुख दर्द बताओ। प्रधान ग्रामवासियों का पिता सदृश हुआ। संतान पिता से जिद-हठ नहीं करेगी तो फिर किससे मागेंगी अपना हक?'[2]

प्रस्तुत उपन्यास में सोनपुरा गाँव के साथ-साथ श्यामली गाँव की गंदी राजनीति का चित्रण भी मैत्रेयी ने किया है। शामली गाँव में आरक्षण के नाम पर लोगों को विषमता फैलाने का प्रयास करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी राजनीति को लेकर मकरंद ने मंदा को पत्र लिखा, वह कहता है कि एम. डी. मेडिसिन के लिए उसे दाखिला मिल गया। आगे कहता है 'मेहनत तो की थी, लेकिन डर लगता था, यहाँ चलती है राजनीति से प्रोफेसरों की औलाद राज करती है। उन्ही के बेटे-बेटियों से खतरा रहता है। अंधेरा मचा रहा है इन लोगों ने। श्रम पर गुणा-भाग का कब्जा।'[3] मैत्रेयी पुष्पा ने इस उपन्यास में केवल छोटे-छोटे गाँव की राजनीतिक समस्या के साथ-साथ महानगरों में शिक्षा के क्षेत्र में चलती राजनीति का चित्रण किया।

उपन्यास में सांसद राजासाहब लोगों को झूठ-मुठ के बातों द्वारा वोटों का सौदा करते हैं। गाँव के विकास बिजली, पूल बंधवाना, अस्पताल बंधवाना आदि झुठे आश्वासन गाँव वालों को देते हैं। मंदा जानती है कि, राजनेता लोग उच्च राजनीति का उपयोग सिर्फ स्वार्थ के लिए करते हैं। फिर भी वह पेड़ होकर गाँव की समस्याओं राजा साहब को बताती है। तब राजासाहब को मंदाकिनी की बातें नहीं बल्कि लग रहा है था की, चाबुक मार रही है। तात्पर्य मैत्रेयी ने नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति पर आज उजागर किया है। गाँव के गिट्टी के क्रेशर पर मजदूरी करने वाले राऊतों की औरतें बेचने तथा मजदूरी के पैसों के साथ ले जाने वाले शोषण को लेकर क्रेशर के मालिक अभिलाखसिंह से झगड़ा करती है। गुंडों के बीच लड़ाई झगड़ा होता है, मारपीट होती है। इस जुर्म में राऊतों को वह हवालात में बंद किया जाता है। मंदा उन्हीं की जमानत के लिए पुलिस थाने जाती है। तब दस्तखत करते समय मेज पर झुकी मंदा के साथ दिवान अनैतिकता से पेश आता है। अर्थात लोगों का रक्षण करने वाला अफसर भी अनैतिक रूप से व्यवहार करता है। इसका चित्रण पुष्पा जी ने किया है। सात वर्ष पश्चात मंदा शामली से सोनपुरा आती है। तब गाँव के विकास को लेकर निरंतर प्रयास करती है। गाँव के गरीबी अज्ञानता को मिटाकर एकता बनाए रखने का मंदा का संकल्प किंतु अभीलाख सिंह जैसे ठेकेदार एवं इलाके के राजनेता मंदा के संकल्प को अंजाम देने के हथकंडे अपनाते है डराना, धमकाना, मारपीट, गाली-गलौच के कारण वह निराश होती है। किंतु राजनेताओं के दाँवपेचो से गाँव वालों को मुक्त कराने का प्रयास निरंतर करती है। मंदा गाँव के विकास के साथ साथ साथ गाँव की दशा सुधारने के लिए चुनाव पर बहिष्कार की बात की, तब गाँव का एक व्यक्ति कहता है, 'सरकारी लोगों से, नेताओं से और मंत्री-संतरियों से अब हमारा विश्वास हट गया है। सौ बातों की एक बात कहते हैं, चाहे आज कहवा लो, चाहे कल, की अब की बार हम वोट डालने जाएंगे ही नहीं। एन हमारे द्वारे पर मोटर क्या जहाज लगाए खड़े रहना ससुर जी।'[4] केवल 20 वर्ष की आयु में मंदा गाँव की राजनीतिक दाँवपेच, भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अनैतिकता, दबाव नीति इन प्रवृत्तियों के खिलाफ सोनपुरा में राजनीतिक जागृति पर नवनिर्माण का प्रयास कर गाँव में अस्पताल, जवाहर योजना, शिक्षा का प्रचार, मजदूरों को एकत्रित कर संगठन (यूनियन) बनाना, किसान आंदोलन, भ्रष्ट राजनेताओं के विरुद्ध गाँव के लोगों में जनजागृति लाने का प्रयास किया है। 'इदन्नमम्' की मंदा गाँव की सत्ता केंद्रित राजनीतिक पाखंड को अनैतिक शासन व्यवस्था को उजागर कर समग्र भारतीय राजनीतिक परिवेश का मानव चित्र हमारे सामने उपस्थित करती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीतिक समस्याओं व
समय समग्र भारतीय राजनीति की संवैधानिक स्थिति का
के साथ-साथ उच्च राजनीति के बदले हुए रुप को
राजनिती की संवैधानिक स्थिति में कितने भी परिवर्तन ह
व्यवस्था करें किंतु राजनिती में अनीति, अनाचार, धोखाधडी,
रिश्वतखोरी, शोषण इन हथखंडो को अपनाते हुये राजनिती आगे
जा रही है। भारतीय राजनीति वास्तव में देश की बुनियादी विकास
लिए, लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए निर्मित हुई। किंतु हम देखते ह
की, राजनीति का वह बिगडा रुप। मैत्रेयी ने अपने उपन्यासों में
राजनितीक समस्याओं को उजागर करने के साथ-साथ स्त्रियों के
राजनीतिक स्थान को लेकर राजनीति में परिवर्तन की बात करती
दिखाई देती है राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन की गिनती स्त्री पात्र
द्वारा दर्शायी है। चाहे परिणाम कुछ भी हो, उसकी चिंता न कर नए
लोकतंत्र की बात वह करती है। भले ही मैत्रेयी जी ने राजनीति में
स्त्रियों का स्थान स्विकार किया है। किंतु क्या वास्तव में यह परिवर्तन
समाज अपनाएगा या नहीं ? यह प्रश्न अनुत्तरित है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

फणीश्वरनाथ रेणु

का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani